।।श्री रसिकेन्द्र विहारिणे नमः।।
।।श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः।।

श्री झूलन विहार पदावली

सम्पादक :
महेश चन्द्र मिश्र

प्रकाशक :
श्री सीताराम सन्देश कार्यालय
श्री लक्ष्मण किला, श्री अयोध्याजी 224 123
फैजाबाद (उत्तर प्रदेश), मो. 9415062831

प्रकाशक :
श्रीलक्ष्मण किला, श्री अयोध्याजी 224 123
फैजाबाद (उत्तर प्रदेश)
मो. 9415062831

संशोधित एवं परिवर्धित
छठाँ संस्करण

सम्पादकः
महेश चन्द्र मिश्र
9838893001

मूल्य : 25 रुपये

झूलनोत्सव 2011

टंकण :
वीके कम्प्यूटर्स
फैजाबाद

भूमिका

प्रभु श्रीसीताराम जी महाराज की अमृतस्यन्दिनी लीलाओं का अनुस्मरण उपासकों का प्राण है। समैया-उत्सवों के माध्यम से अपने प्राणधन की सन्निधि का अनुभव इन आयोजनों का सुफल है।

श्री अग्र स्वामी जी, श्रीयुगलप्रिया शरण जी महाराज , स्वामी श्री युगलानन्य शरण जी तथा श्री सिया अली जी प्रभृति रसिकाचार्यों के पद झूलन बिहार पदावली के माध्यम से प्रस्तुत हैं। अपने आराध्य की अहर्निश सेवा का अनुष्ठान और उनकी प्रसन्नता को परम प्राप्य मानना रसिकजनों का स्वधर्म है। सखी जनों के साथ श्री युगल सरकार का झूलन विहार अलियों के लिये ही आस्वाद्य है। सामान्य संसार बुद्धि से पीड़ित जन के लिये यह अगम है। श्री रसिक अली जी महाराज की वाणी है-

यह ललित लीला लाल सिय की त्रिगुनमाया पार।
पुरुष तहँ पहुँचे नहीं केवल अली अधिकार।।

आचार्य कृपा से प्राप्त उपासना की इस अलौकिक रीति से श्री युगल सरकार की सेवा में सर्वतोभावेन अपने को सौंपकर साधक लोक बाधाओं से निवृत्त हो जाता है। भगवान की अर्चना में आचार्य प्रणीत पदों का गान महत्त्वपूर्ण अंग है। सन्त भक्त इससे लाभान्वित हों यही पदावली प्रकाशन का उद्देश्य है।

छठे संस्करण का संपादन संशोधन श्री महेश जी ने मनोयोग पूर्वक किया है। इसमें परिशिष्ट के पद सामान्य क्रम में कर दिये गये हैं। प्रयास किया गया है कि पाठ अधिकतम शुद्ध हो। ग्रन्थों के प्रकाशन में कुछ व्यतिक्रम रहा है, श्री युगल सरकार की कृपा से शीघ्र ही अन्य साहित्य-सामग्री भी वैष्णवों जनों के सम्मुख होगी इसी मंगलाशासन के साथ -

मैथली रमण शरण

श्री लक्ष्मण किला, अयोध्या

अकारादि क्रम से पद-सूची

श्री झूलन विहार पदावली

श्री झूलन विहार पदावली

श्री सीतारामाभ्यां नमः

श्री झूलन विहार पदावली

श्री अग्रअली जी का पद-१

जनकपुर लागत तीज सुहाई ।।
रंग रँगीली अतिहिं छबीली सब मिलि झूलन आई।
सावन मनभावन पिय प्यारी अवनी सहज सुहाई।।
पावन कंज पुंज सुख बरषत करषत मन हरषाई।
कंचनखम्भ जड़ित डाँडी नग विविध विचित्र बनाई।।
रेशम डोरि कोरि बनि आई चहुँदिसि जलज जड़ाई।
लाले बाल लाल रंग भीनी लालन लाल लड़ाई।।
चन्द्रकला प्यारी कर गहिकै मंगल गाइ चढ़ाई।
चारुशिला पिय नैन इसारन झूलन प्रथम सिखाई।।
झोंका देत लेत सुख पिय को मन्द-मन्द मुसुकाई।।
लालहिं पाग लाल सिर चूनरि लाली अति मनभाई।।
उमगेउ रंग-अनंग परस्पर मैन मलार जमाई।
गावहिं समर रंग भरि भामिनि कोकिल कण्ठ लजाई।।
ठाकुर हमरे राम मनमोहन अंगन रूप लुनाई।
ठकुराइन मिथिलेश लाड़िली शील सनेह भलाई।।
होड़ा-होड़ी मच्यो है हिंडोला शोभा कहि न सिराई।
'अग्रअली' प्रिय दम्पति झूलत जनकलली रघुराई।।

पद-२

झूलत सीताराम हिंडोरे ।

श्याम गौर अभिराम मनोहर रतिपति के चितचोरे।।
नील पीत वर वसन लसत तन उठत सुगन्ध झकोरे।
सहचरि हरषि झुलावहिं गावहिं छवि निरखति तृन तोरे।।
मन्द-मन्द मुसुकात छबीलो रमकन थोरे-थोरे।
अति सुकुमारि 'अग्र' की स्वामिनि डरपि गहति पट छोरे।।

पद-३

झूलत सिया राजिव नैन।

रतन जड़ित हिंडोलना सखि राम सुख के ऐन।
श्याम अँग पर गौर झलकत दामिनी घन गैन।।
मैथिली रघुवीर शोभा निरखि लज्जित मैन।
नाम पिय को लेहु नागरि ज्यों सखिन मन चैन।।
जानकी नहिं लेति मुखसों देति लोचन सैन।
परस्पर झूलत झुलावत बदत मधुरै बैन।
अवधपुर नित केलि दम्पति 'अग्र' आनन्द दैन।।

पद-४

झूलत राम राजिव नैन।

जनकजा सनमुख विराजति तड़ित ज्यों घन गैन।
अतिहिं झूलत मनहिं फूलत रसहिं तोषत मैन।
लाल के उर लागि राजति निकष रेखा ऐन।।
परस्पर अनुराग दोऊ बदत मधुरै बैन।
जाल रन्ध्रनि निरखि बनिता 'अग्र' उर सुख दैन।।

पद-५

सिया प्यारी अति सुकुमारी हिंडोलना में काँई झूलौ राज।
अगर चन्दन को बन्यो हिंडोरा मलयागिरि को पटा।
रेशम डोरि पवन पुरवैया बह सावन को घटा।।
प्यारी झूलैं लाल झुलावैं भली बनी सजनी।।
उड़ि-उड़ि अँचरा परत भुजन पर डरपति शशिबदनी।।
विपिन प्रमोद लता कुंजन में श्री सरयू के तटा।
सिय प्यारी के झूलना वे निरखति 'अग्र' छटा।।

पद-६

ए दोऊ झूलत रंग हिंडोरे।

दशरथसुत अरु जनकनंदिनी चितवनि में चितचोरे।।
नाान्हीं-नान्हीं बूँद पवन पुरवैया फुहियाँ परत थोरे-थोरे।
हरि-हरि भूमि लता झुकि आई सरयू लेति हिलोरे।।
हयदल पैदल रथदल गजदल कोट बने चहुँओरे।
उपवन बाग विहंगम बोलें कोकिल मोर चकोरे।।
वाणी विमल सखी सब गावैं अपनी-अपनी ओरे।
नागरि नाम लिवावैं पिय को सियाजू हँसें मुख मोरे।।
बाजा बजन लगे चहुँदिशि ते अधिक सघन घनघोरे।
'अग्रअली' सिय रूप निहारे चरण कमल करजोरे।।

पद-७

आली री! राघो के रुचिर हिंडोलना झूलन जैए।
फटिक भीति सुचारु चहुँ दिशि मंजु मनिमय पौरि।।
गच काँच लखि मन नाच सखि जनु पाँचसर सुफँसौरि।

तोरन वितान पताक चामर धुज सुमन फल घौरि।।
प्रतिछाँह छवि कवि साखि दै प्रति सों कहैं गुरु हौंरि।।१।।
मदन जय के खम्भ से रचे खम्भ सरल विसाल।
पाटीर पाटि विचित्र भौंरा बलित बेलन लाल।।
डाँड़ी कनक कुंकुम तिलक रेखैं सी मनसिज भाल।
पटुली पदिक रति हृदय जनु कलधौत कोमल माल।।२।।
उनये सघन घनघोर मृदु झरि सुखद सावन लाग।
बगपाँति सुर धनु दमक दामिनि हरित भूमि विभाग।।
दादुर मुदित भरे सरित सर महि उमँग जनु अनुराग।
पिक मोर मधुप चकोर चातक सोर उपवन बाग।।३।।
सो समौ देखि सुहावनो नवसत सँवारि-सँवारि।
गुन रूप यौवन सींव सुन्दरि चली झुँडनि झारि।
हिंडोल साल विलोकि सब अंचल पसारि-पसारि।
लागीं असीसन रामसीतहिं सुख समाज निहारि।।४।।
झूलहिं झुलावहिं ओसरिन्ह गावैं सु गौड़ मलार।
मंजीर-नूपुर-वलय-धुनि जनु काम-करतल तार।
अति मचत स्रमकन मुखनि विथुरे चिकुर विलुलित हार।
तम तड़ित उडुगन अरुण विधु जन करत व्योम विहार।।५।।
हिय हरषि वरषि प्रसून निरखति बिबध-तिय तृन तूरि।
आनंद जल लोचन, मुदित मन, पुलक तन भरिपूरि।
सब कहहिं अविचल राज नित कल्यान मंगल भूरि।
चिर जियों जानकिनाथ जग 'तुलसी' सँजीवनि मूरि।।६।।

पद-८

कोसलपुरी सुहावनी सरि सरजू के तीर।
भूपावली - मुकुटमुनि नृपति जहाँ रघुवीर।।
पुर नर-नारि चतुर अति धरम निपुन रत नीति।
सहज सुभायँ सकल उर श्री रघुवर पद प्रीति।।
श्रीराम पद जलजात सबके प्रीति अविरल पावनी।
जो चहत सुक सनकादि संभु विरंचि मुनिमन भावनी।।
सबहीं के सुन्दर मंदिराजिर राउ रंक न लखि परै।
नाकेस दुर्लभ भोग लोग करहिं न मन विषयनि हरै।।१।।
सब रितु सुखप्राद सो पुरी पावस अति कमनीय।
निरखत मनहिं हरत हठि हरित अवनि रमनीय।।
बीरबहूटि बिराजहीं दादुर धुनि चहुँओर।
मधुर गरजि घन बरषहीं सुनि-सुनि बोलत मोर।।
बोलत जो चातक मोर कोकिल कीर पारावत घने।
खग विपुल पाले बालकनि कूजत उड़ात सुहावने।।
बकराजि राजति गगन हरिधनु तड़ित दिसि-दिसि सोहहीं।
नभ नगर की शोभा अतुल अवलोकि मुनि मन मोहहीं।।२।।
गृह-गृह रचे हिंडोलना महि गच काँच सुढार।
चित्र-विचित्र चहूँदिसि परदा फटिक पगार।
सरल विसाल विराजहीं विद्रुम-खम्भ सुजोर।
चारु पाटि पटि पुरट की झरकत मरकत भौंर।।
मरकत भँवर डाँड़ी कनकमनि जटित दुति जगमगि रही।

पटुली मनहुँ विधि निपुनता निज प्रगट करि राखी सही।।
बहुरंग लसत वितान मुकुतादाम सहित- मनोहरा।
नव सुमन माल सुगंध लोभे मंजु गुंजत मधुकरा।।३।।
झुंड-झुंड झूलन चलीं गजगामिनि वर नारि।
कुसुँभ चीर तनु सोहहीं भूषन विविध सँवारि।।
पिकबयनी मृगलोचनी सारद ससि सम तुंड।
राम सुजस सब गावहीं सुसुर सुसारँग गुंड।।
सारंग गुंड मलार सोरठ सुहव सुघरनि बाजहीं।
बहु भाँति तान तरंग सुनि गंधर्व किन्नर लाजहीं।।
अति मचत छूटत कुटिल कच छवि अधिक सुंदर पावहीं।
पट उड़त भूषन खसत हँसि-हँसि अपर सखी झुलावहीं।।४।।
फिरि-फिरि झूलहिं भामिनी अपनी अपनी बार।
विबुध विमान थकित भये देखत चरित अपार।।
बरषि सुमन हरषहिं उर बरनहिं हरि गुन-गाथ।
पुनि-पुनि प्रभुहिं प्रसंसहीं जय-जय जानकिनाथ।।
जय जानकीपति विसद कीरति सकल-लोक-मलापहा।
सुरवधू देहिं असीस चिरजिव रामसुख संपति महा।
पावस समय कछु अवध बरनत सुनि अघौघ नसावहीं।
रघुवीर के गुनगन नवल नित 'दास तुलसी' गावहीं।।५।

पद-९

झूलैं नवल हिंडोरे, पिय प्यारे संग बनि ठनि श्यामा।। रतन जड़ित अति रुचिर हिंडोरा तामें, रचना अनके द्रुम सावन के कुंज बीच, बाजत मृदंग आदि गावति सखी समूह, कोटि काम रति बामा।। शीतल सुगंध मंद वायु के प्रसंग तहँ, घेरि-घेरि आवत बलाहक के वृन्द, नान्हीं नान्हीं बुँदियन बरसन के समय, छवि अति शोभित सियरामा।। शीश को नवाय ईश को मनाय कै 'मुनीश' बार-बार विनय करत कर जोरि-जोरि, नृपति किशोर औ किशोरीजू आनन्द रहैं, यह हमार मनकामा।।

पद-१०

झोंका दीजै सम्हारि के मोरी सारी न लटके।
ई सारी मिथिला से आई चाँद सूरज दोउ भटके।।
सघन कुंज द्रुम डार कँटीलो कहीं छोर जनि अटके।
'कृपासखी' इनकी चंचलता नैननि में कछु खटके।।

पद-११

गुमानी झूलन की रितु आई।
सावन सरिस सुहागिनि के सुख साजन संग सुहाई।।
प्यारे प्रीतम प्रेमनगर सौं नीकी वस्तु बिसाई।
पावस पैठ काम कंचन सौं कामिनि करत कमाई।।
सूम सुरेश भये अब दानी पल-पल घन बरषाई।
संमत मास पपीहा बोलत तिनकी प्यास मिटाई।।

कहत सिया सुन्दर बालम तुम दूर करौ निठुराई।
'कृपानिवास' आस प्यारी की मिलि रसरंग मचाई।।

पद-१२

झूलन पधारो जी म्हारो राज।

कारी पीरी घटा घन उमड़ी बिजुली चमकत आज।।
सुनि बानी रससानी प्यारे चले झूलन के काज।
'कृपानिवास' अली की जीवन गरे लाग तजि लाज।।

पद-१३

रंग मानी जू रंग मानी! थारी रमक झूलन सुखदानी।
श्यामसुन्दर म्हारी छतियाँ धड़कैं नैनन बरसत पानी।।
मदन मनोरथ उपजत हिय सों पिय सों सिय बतरानी।
'कृपानिवासी' हँसि रससानी रघुवर उर लपटानी।।

पद-१४

धीरा झूलोजी धीरा झूलो! म्हारी छतियाँ धड़कि काँई हूलो।
बार छूटिगै हार टूटिगै गिरिगै अंग दुकूलो।।
राम रसिक रस सहजक लीजै नाजुकता समतूलो।
'कृपानिवासी' कहत छबीली छयल मया जनि भूलो।।

पद-१५

तेरी बाँकी झुलनि पर वारी रे।

झूलन जोर हिया बिच कसकत मानहुं हूल कटारी रे।।
नैन कटाक्ष बान धनु भृकुटी जुलफन जाल सुधारी रे।
'कृपानिवासी' झुलनि मन लीना रहि गई ठाढ़ि की ठाढ़ी रे।।

पद-१६

झूलत सिया बल्लभ लाल।

लाल कंचन खंभ सुन्दर ललित डाँड़ी लाल।।
लाल भूषन अंग झलकत लसत चीर सु लाल।।
लाल दोउ के बदन सुन्दर अधर बीरी लाल।
लाल सखियाँ लाल गावैं सब झुलावैं लाल।
मोर हंस चकोर कोयल भनत बानी लाल।
बाल रीझत लाल ऊपर 'परसपर' सब लाल।
'कृपानिवास' सुलाल जोड़ी निरखि नयन निहाल।।

पद-१७

झुलावत राम रसिक पटरानी।

कर गहि डोर चकोर दृगन करि चितवत चन्द्र लुभानी।।
नाह-नेह को निरखि नागरी नैनन में मुसुकानी।
'कृपानिवास' विलासिनि प्यारी प्रीतम को रसदानी।।

पद-१८

महल पधारो नैना आलस भरे।

लोचन फेरि हेरि हँसि नागर मनमथ पाँव परे।।
झमकि चले जनु मदन झूमते सखियन बाँह धरे।
छूटत छवि की छटा अटा चढ़ि मधुर गान उचरे।
बरसत सुमन सुगन्ध फुहारे सेज भवन उघरे।
'कृपानिवास' श्रीजानकीवल्लभ रैन सैन सु ढरे।।

पद-१९

सखी री सावन आयो राघोजी रच्यो है हिंडोल।
देखिये तो जाय प्रमोदबन मणिमय जड़ित हिंडोल।
सखिन सहित तहँ झूलत पहिरे नील रंग चोल।
'रामसखे' लाल मिलन को हिय बिधु मदन कलोल।

पद-२०

झूलत नवल दशरथ लाल।

सरयू तीर प्रमोदवन में लिये सँग सिय बाल।
अरुण मणिमय हेम डाँड़ी रतन खंभ विशाल।
गुही रेशम डोरि मोतिन पटुली जटित प्रवाल।
लखि विचित्र हिंडोल विमला नटति दै करताल।
हेरि हरि मुख देत झोंका परी छवि के जाल।
प्रेम वश लखि गही प्रीतम बोलि बचन रसाल।
'रामसखे' विलोकि या रस को न होत निहाल।

पद-२१

हिंडोले झूलत लाड़िली लाल।

नील सघन पल्लव तरु शोभित जनु वितान घन माल।
गरजहिं मधुर-मधुर पिय मन लै कोकिल शब्द सुराल।
बरषत मेह झरत तरु अमृत बोलत मोरि रसाल।
श्री सरयू उमगति उज्वल जल लहरि उठत मनि जाल।
त्रिविध पवन निन्दक मारुत चल पट फहरात सुलाल।
बहु सखि संग-संग झूलति हैं बहुत झुलावति बा[illegible]

गावहिं मधुर लाल मन मोहैं करहिं विविध रस ख्याल।।
मनहुँ मदन रति के ब्याहन कहँ साजि सकल निज जाल।
लाल विहार देखि बन फूल्यो विसरि गयो सब हाल।।
यह रसरासि रसिक कोइ सखि सोइ निशिदिन रहत निहाल।
'रामचरण' यह छाँड़ि कह कछु कारिख तेहि मुख भाल।।

पद-२२

हिंडोले झूलत सिया रघुनन्द।
चलु री सखी नैनन फल लीजै देखि-देखि दोउ चन्द।।
सावन घन घमण्ड झुकि आयो मधुर-मधुर झरि घोरे।
मधुर-मधुर मृदंग सहनाई बोलहिं नाचहिं मोरे।।
झूलहिं रघुवर जनकनन्दिनी सखियाँ झुलावहिं जोरे।
अति सुन्दर बन बन्यो हिंडोरे सँग समाज सब झूलैं।
इत-उत झुकि-झुकि झुलत हिंडोरे मारहिं गेंदन फूलैं।।
झूलहिं संग झुलावहिं बहु प्रिय मधुर-मधुर स्वर गावैं।
'रामचरण' नभ सुरतिय नाचहिं गाय सुमन झरि लावैं।।

पद-२३

हिंडोरे झूलत कोसलचन्द।
बाजहिं बाजन मधुर गान धुनि दसों दिसि होत अनन्द।।
सरयू तीर सुभग श्रृंगार वन ललित परम फल फूले।
गुञ्जहिं भ्रमर मधुर स्वर कोकिल बोलहिं पिय अनुकूले।।
फूलन केर विचित्र हिंडोरा लसत फूलमय डोरी।
फूलन के युग खंभ मनोहर रचि पचि मदन सच्यो री।।
फूलन के युग खंभ मनोहर

फूल मुकुट पट लसत राम के फूलन के सिय सारी।
नख सिख लौं फूलन के भूषण दम्पति अंग सँवारी।।
फूल तरंग उठत सरयू की फूल वरषि धन धानी।
'रामचरण' सखि सब श्रृंगार किये फूल गानमय बानी।।

पद-२४

झूलन पधारो जी श्याम सुजान।
अतर भरी अलकैं अति सोहैं हरत मदन को सान।।
रंग महल ते निकसैं दोऊ कोटि उदय जनु भान।
कोउ नाचत कोउ यन्त्र बजावत कोउ उचरत मृदु तान।।
कोउ कर चँवर छत्र कोउ लीन्हैं कोउ लिए पाननदानं।
'प्रियासखी' दोउ अंसन्ह दीन्हें बतियाँ करत लगि कान।

पद-२५

झुलन्दा तेरी अंग-अंग माधुरी जोर।
सुरंग पान मोतिन की कलँगी हँसि बोलनि चितचोर।।
भृकुटी कुटिल नैन रतनारे हेरनि बंक मरोर।।
'प्रियासखी' दोउ अवध विहारी बलिहारी तृन तोर।

पद-२६

झूलत राजकिशोर री, अलि निरखि दृगन की कोर री
दशरथसुत अरु जनकनन्दिनी अँग अँग छवि चितचोर री।
नान्हि नान्हि बुँदियन बरषि मेहरवा बिजुरी चमकै जोर री
पियजू के भीजै पचरंग पगिया सियजू के वसन निचोर री
बन प्रमोद के ललित लतन में बोलत मोर चकोर री।

चहुँदिशि अली खड़ी गुन गावैं मेघ मलार मरोर री।।
नागरि नाम लिवावति पिय को सियजू हँसों मुखमोर री।
'प्रियासखी' दोउ राज दुलारे नव जोवन के जोर री।।

पद-२७

हिंडोरे झूलत सिय सुकुमारी।
रघुनन्दन मृदु मंजु कंज कर झोंका देत सम्हारी।।
चन्द वदन पर अलकैं झलकैं मनु नागिन सी कारी।
ललित कपोलन झूमक झलकैं ललकैं लाल निहारी।
सावन घटा घुमड़ि घनघोरैं कोउ सखि देत मृदंगन तारी।
निर्तत सहजा प्यारी कोउ सखि लेत तान सुखकारी।।
छूटत अतर गुलाब फुहारी 'प्रियासखी' बलिहारी।

पद-२८

तनिक तुम धीरे झूलो लाल।
डरपति हैं सिय अति सुकुमारी रमक हिंडोर की चाल।।
दामिनि सी दमकत चहुँदिशि तै शोभित हैं बहु बाल।
उमड़ि-घुमड़ि घन बरषन लागे गावत गीत रसाल।
नील पीत पट सोभित दोउ तन मानहुँ छवि के जाल।
जरकस पाग पिया सिर सोहत तुर्रा कलँगी हाल।।
सीस चन्द्रिका फूल मनोहर बेंदी शोभित भाल।
रंग महल बिच जुगल हिंडोरा शोभा बनी है बिसाल।।
'सरयूसखी' सब पुरजन ठाढ़े निरखत होत निहाल।

पद-२९

रंगीले तेरी झूलन है अति प्यारी।

झूलन झुकन हँसन लालन की चितवन नैन कटारी।
श्याम गौर दोउ अंग मनोहर रुप राशि उजियारी
कहत सखी तुम धीरे झूलो डरपत सिया सुकुमारी।
'सरयूसखी' ये युगल कुँवर पर कोटिन रतिपति वारी

पद-३०

रंग झूलैं अवधबिहारी

रंग झूलैं अवधबिहारी हो सरयू तट संग लिये सिय प्यारी
सावन कुञ्ज सुहावन पावन रतन भूमि हरियारी।
निज-निज कुञ्जन ते बनि आई नित्य सखी अधिकारी
गावहिं सरसाती बरसाती दरशाती सुख भारी।
कबहँ झुलावत प्यारी प्रीतम कबहुँक प्रीतम प्यारी
युगलप्रिया रसमत्त परस्पर दंपति लीलाधारी।

पद-३१

जरा झूलो न लाला हमारे संग।

तुम प्रीतम हम प्यारी बनी हैं तुम दीपक मेरे नैना पतंग।
तुम रसिया हम आली छबीली लागो है नेह पिया तुम्हारे संग
'सरयूसखी' झूलन को निकसी बाजैं मृदंग तहँ उठै तरंग।

पद-३२

हिंडोरे झूलैं श्री जानकी जान।।

युगल प्रकाश कुञ्ज कंचनमय विपिन प्रमोद लतान
श्याम बदन पर जुलफैं छोड़े मन्द-मन्द मुसुक्यान।
प्यारी संग समाज अलीगन लेत नई-नई तान

'युगलप्रिया' वारति तन मन धन करति निछावरि प्रान।।

पद-३३

रसिक दोउ झूलत सरयू तीर।
रघुनन्दन अरु जनकनन्दिनी श्यामल गौर शरीर।।
राजत छविमय रतन हिंडोरा तापर बोलत कीर।
गावहिं छवि अवलोकि प्रेम भरि चहुँ दिशि सखिन की भीर।
बाजत बीन मुचंग उपंग मृदंग ताल अति धीर।
'युगलप्रिया' अति सुख बरसत जब लेत तान गंभीर।।

पद-३४

किशोरी संग झूलत नवल किशोर।
दशरथनन्दन जनकनन्दिनी सुन्दर श्यामल गौर।।
सरयू तीर सुखद प्रमोदवन विश्वभूमि शिरमौर।
तामधि मणिमय रचित हिंडोरा लसत हेममय डोर।।
चन्द्रकला सखि हरषि झुलावति विमला ढोरति चौंर।
'युगलप्रिया' यह मधुर केलि लखि सुधि बुधि भई सब भोर।।

पद-३५

पिय साँवरे सलोने झूला झूलो।
जैसी ये रंगभरी सिय प्यारी अलिगन त्यों समतूलो।।
तैसी ये रंगमहल छवि अद्भुत वन प्रमोद सुख मूलो।
श्री सरयू मणि जटित घाट दोउ कंज प्रफुल्लित फूलो।।
सुनत हिंडोर कुंज ढिग आये पिय प्यारी दिल दूलो।
'युगलप्रिया' के जीवन धन दोउ सदा रहो अनुकूलो।।

पद–३६

सबहिं झुलावो री हिंडोरे, अलबेली राजकुमारी
सावन तीज सोहावन राजे, विविध भाँति के भूषण साजे
अंगन प्रति कोटिन रति वारिय, प्राण करौं बलिहारी
कमला विमला चँवर ढुरावैं, गान कला सुमृदग बजावैं
चन्द्रकला कछु तान सुनावैं, लाल देत करतारी
सुख समुद्र श्री जनकदुलारी, रघुनन्दन की प्राणपियारी
'युगलप्रिया' तन मन धन वारी, वारि-वारि डारी

पद–३७

हिंडोरे कुँवरि कुँवरि झूलैं मेरो हियरा लखि फूलैं
अतिहिं सुघर उपमा न पैयत वर भलोइ कहत क
मति न लहत जहँ चिन्तामणि भूमिद्रुम झूमि-झू
रहि छवि, श्रीसरयू कूलै।। अतिहिं सोहाई म
अवध लोगाई आई तेहि समता को रति रंचक
पाइ, निज परिकर समतूलैं
गावैं सु बजावैं अनुराग को बढ़ावैं राग रागि
जमावैं प्राण प्राणिन रिझावैं लाल। चन्द्रकला दि
हेरिअति सुख पावैं, सिय प्यारी सुख मूलैं
झूला को लगाई मणि जटित प्रवाल माई द्रु
सोहाई पटुली लगाई सुखदाई, रेशम रजु मूलैं
'युगलप्रिया' झुलाई दंपति रसिकराय झोंका
मुदित मन सुख न समाई अनुपम छ

छाई रति काम को लजाई, ये दोउ रसिया दिल दूलैं।।

पद-३८

दशरथ जू के छैला हो राज झूला झूलो।
तू तो रँगीला पिय। हौं तो रँगोली और रंगीली सखी समतूलो।
रंग भरी सरयू उमड़ी है रंग भरो विपिन सब फूलो।
'युगलप्रिया' नवरंग साज सब लखि प्रीतम अनुकूलो।।

पद-३९

हिंडोला आज अनोखो रंग।
सावन तीज सुहागिनी सियजू झूलत प्रीतम संग।।
कनक-भवन आन्दोल कुंज बिच छाई तान-तरंग।
विमला कमला चन्द्रकलादिक झोंका देत उमंग।।
सारंगी स्वर-मण्डल वीणा झाँझ मृदंग उपंग।
आनंद छाय बजावत अलि बहु कोउ गति लेत सुढंग।।
इत गरजत घन उमड़ि घुमड़ि-नभ चमकत दामिनि संग।
'रसिकअली' सिय पिय विलास लखि मोहें रती अनंग।।

पद-४०

राज रंग मानो चढ़ि नवल हिंडोरना।।
सावन की तीज आजु रीझि-रीझि गावैं अलि,
तान रंग छावै मृदु मृदंग टकोरना।।
उबटि अन्हाय सोधों अञ्जन फुलेल पान,
वसन सुरंग मणि भूषण सजोरना।
इत घन घटा घोर दामिनी दमके जोर,

चहुँदिशि बोले मोर चातक चकोरना।।
विपिन प्रमोद शोभा देखि-दखि मन लोभा,
पावस द्रुमन शोभा नभ छवि छोरना।।
'रसिकअली' के प्राण प्यारे रघुलाल सिया,
रमक-झमक झूलैं हूलैं चित चोरना।।

पद-४१

झूलत रसिकमणि रघुनन्द।
संग सिय अलबेलि नागरि वदन छवि बहु चन्द।
रतन जड़ित हिंडोलना लखि सूर शशि द्युति मन्द।।
'रसिकअली' अलीगन झुलावत मगन छवि के फन्द।।

पद-४२

हिंडोले आली झूलैं युगल किशोर।
पीत नील अम्भोरुह से तनु छवि मकरन्द न थोर।
अरस परस-रस छके छबीले रति मनमथ चितचोर।।
जनकलली रघुलाल सलोने घन दामिनि दुति जोर।
विपिन प्रमोद मही हरियाई द्रुम फूले चहुँओर।।
बोलत विहँग सोहावने सखि चातक मोर-चकोर।
तैसेइ सजल जलद नभ छाये बिजुरी चमक चहुँओर।।
शीतल मन्द-सुगन्ध पवन हिय बाढ़त मदन मरोर।
छूटे कच कम्पत तन प्यारी प्रीतम रंग झकोर।।
सूहे वसन सुहावने तन मचकन घेरत छोर।
नाचत गान करत पिकबयनी छाये मृदंग टँकोर।।

'रसिकअली' लखि युगल रूप रस नहिं लागत दृगकोर।

पद-४३

गावैं रस भरी तान, प्यारो प्यारी कौ झुलावैं।
कनक भवन में कनक हिंडोरा रवि शशि ज्योति लजावै।।
चहुँदिशि ललित वितान बादले झालरि झुमका सुहावै।
इत घन गरजत रिमझिम वरषत मृदु मृदंग धुनि छावै।।
'रसिकअली' सिय प्रीतम ऊपर बार-बार बलि जावै।

पद-४४

हिंडोरे झूलत भरि अनुराग।
सिय की भीजत सुरँग-चून्दरी सुभग राम सिर पाग।।
गावत राग मलार परस्पर छवि छहरत वन बाग।
'विश्वनाथ' छवि निरखत हरषत सरसत सरस सोहाग।।

पद-४५

हिंडोरे झूलत युगलकिशोर।
श्याम गौर मनहरन ललन दोउ अँग-अँग अलि चितचोर।
भूषण वसन सरस रस छवि लखि उमगत जीवन जोर।।
चर[illegible]त पान परस्पर दोऊ निरखत दृग की कोर।
हँसि-हँसि अली मुदित मन गावहिं झोंका दै दुहुं ओर।
'रसमाला' छवि निरखि दुहुँन की वारति काम करोर।।

पद-४६

हिंडोरे झूलत राजकुमार।
अंश धरे भुज जनकलली के गावत मेघ मलार।।

बीरी देत ललन हँसि सियमुख निरखत अंग उदार।
तैसेहिं सिया खवावति पिय को निरख वदन सुखसार।।
सिय के भूषण लाल सँवारत सियजू पिय उरहार।
'रसमाला' दम्पति छवि निरखति ठाढ़ी अली अपार।।

पद-४७

हिंडोरे झूलत जनकलली।
पीतम के सँग कनक हिंडोरे झोंका देत अली।।
कुसुमी वसन पहिरि मणि भूषण पिय संग लगति भली।
मनहुँ नील पंकज के ढिग एक फूली चम्पकली।।
झूलत आप झुलावत सखियाँ विहँसत छैल छली।
'रसमाला' पिय वदन चन्द छवि निरखत मति न चली।।

पद-४८

हिंडोरे झूलत राजिव नैन।
संग लिये सिय को अलबेली बोलत मधुरे बैन।।
कबहूँ पान खवावत सिय को सिय पिय को सुख दैन।
झोंका लेत निरखि मुख की छवि होत दुहुँन मन चैन।।
विमलादिक चहुँओर सखी सब झोंका दै सुख दैन।
'रसमाला' मधुरे सुर गावहिं निरख बदन सुख ऐन।।

पद-४९

तनिक तुम धीरे लला झुलावो।
डरपति हैं सुकुमारी किशोरी डोरी मधुर हलावो।।
रचि बीरी निज करन खवावो शीतल विजन डुलावो।

अपने नैन चकोरन सियमुख इन्दु सुधा छवि प्यावो।।
सोरठ गौंड मलार सोहावन मधुर सुरन कछु गावो।
'रसमाला' तुमहूँ सँग झूलो नैना सफल करावो।।

पद-५०

हिंडोरे झूलत सिय रघुवीर।
श्याम गौर अभिराम राम सिय संग सखिन की भीर।।
अँग-अँग भूषन सजे मनोहर पहिरे नूतन चीर।
चर्बत पान हँसनि चितवनि लखि उठति मनोभव पीर।।
गावहिं गीत अली विमलादिक झोंका दै अति धीर।
'रसमाला' दम्पति छवि ऊपर वारिय तन मन हीर।।

पद-५१

रँग भीने पिया प्यारी दोउ झूलत हिंडोर।
सब सखियाँ झुलावैं गावैं लखि तृन तोर।।
उत पगिया जड़ाऊ शिर कलँगी सजोर।
इत चन्द्रिका झुकी है थिर दामिनि उजोर।।
सोहैं मोतिन की माल उर वसन उजोर।
कल कानन कुण्डल जुलफन की मरोर।
मुख पान की ललाई छाई दसन उजोर।
मन हरन बुलाक नकबेसरि हिलोर।
दोउ करत परस्पर बतियाँ न थोर।।
नेह भरी प्यारी चितवनि लखत किशोर।
घन मधुर-मधुर धुनि गरजत घोर।

चलती है पुरवाई बरषत थोर-थोर।
द्रुम बोलत पपीहा पिक करती है सोर।।
इत सरयू उमड़ि तैसी लेति हैं हिलोर।
दोउ आनँद के कन्द रहे झूलते बहोर।
हँसि-हँसि निरखत 'रसमालिका' की ओर।।

पद-५२

रँग झूलना रे झूले।
कुंज मनोहर अद्भुत सरयूकूलना रे।।
कमला विमला चमर ढुरावति कोटिन रति समतूलना रे।
जै श्रीचन्द्रकलादि सहचरी युगलप्रिया छवि मूलना रे।।

पद-५३

रंगमहल के आँगन मध्य अष्टकुञ्ज,
कनक भवन रमन गौर श्याम जोरी।
जैसो ई घन कारो दमकत दामिनि,
अंग उपमेय लै हुलासि हियो गोरी।।
चहुँदिशि अलिन के कुञ्ज मनोहर,
लसति सप्त खंड अटा आई एक ठौरी।
सेवा सावधान प्राण जानकिवल्लभ,
नवलकिशोर प्यारी नवलकिशोरी।।
कोउ जन्त्र वीना लै प्रवीन तानपूर,
कला पावस मलार टेर मृदंग टकोरी।
ता तरंग मगन सुख सिन्धु माहि,
युगलप्रिया मति गति भई भोरी।।

पद-५४

झूलत सियवर राज हमारे।

अंसन बाँह परसपर धारे, झनक-झनक नूपुर झनकारे।।
शिरन क्रोट चन्द्रिका सँवारे, कोटि भानु शशि निन्दनिहारे।
मुक्तामाल गले बिच धारे, घनदामिनि बिच दमकत तारे।।
श्याम गौर छवि अमित अपारे, नील पीत अम्बरन सँवारे।
कुण्डल श्रवन झूमका न्यारे, छूटे अलक वदन सुकुमारे।।
गरजत बरषत बूँद फुहारे, पपिहा पिउ-पिउ करत पुकारे।
झोंका देत अलीगन सारे, 'अलि दम्पति' मन मोद अपारे।।

पद-५५

सियजू की समता पावन को चाहसि दुइ दिन को सावन।।
नित करुणा रस धारा बरषति सिय हिय ताप नसावन।
तू ऊपर को ताप नसावै सोउ कबहुँ तरसावन।
पंक बढ़ावन तू सियजू तो जग को पंक बहावन।
गरजवन्त तू सिय अलगरजी जन को गरज पुरावन।।
तेरे घनश्यामहि दक्षिन को मारुत प्रबल उड़ावन।
सियजू के घनस्याम अकम्पन हिय अनुराग बढ़ावन।।
सिय दामिनि घनश्याम रामजू मिलिकै भये सोहावन।
'देव' सार अब निसरिहिं जैसे परत दूध में जामन।।

पद-५६

देखो राम बने जनु सावन, सिय लगीं रंग बढ़ावन।
सियवर की मोतिन की माला सो बग पाँति लजावन।।

इन्द्रधनुष सिन्दूर सिया को घन रस को बरषावन।
पाछिलो पवन सो सन्त विचारो श्याम घटा प्रगटावन।
रवि बिनु कवि बुध मिलिकै लागे रस की झड़ी लगावन।
सियजू उत्तर दिसि की दामिनि राम सरूप लभावन ।।
चमकि झमकि सो निज दासन के अन्तर जोति जगावन।
ब्रह्मदेवहूँ यह सावन को करत निरंतर ध्यावन।
सियारामजू जनम-जनम को जिय की जरनि मिटावन।।

पद-५७

आज दोउ झूलत रंग भरे, सजि सब साज हरे।।
हरित कुंज घनलता हरी हैं तरुवर हरित फरे।
हरित भूमि नभ हरी हरीमय पंछी हरित चरे।।
हरित हिंडोला हरित बाग में हरित डोर जकरे।
हरित वसन भूषण औ आसन चामर हरित ढरे।।
हरित सखी दोउ ओर झुलावति मेघ राग उचरे।
दोउ किशोर तेहिं मध्य लसत हैं हरित छत्र सिर धरे।।
पीत श्याम आपस में मिलिकै हरित रंग उघरे।
कोयल कीर मोर गन के मिस देखिहिं 'देव' खरे।।

पद-५८

ललित अति कुंजन की घन घटा। जाहि देखि दुःख हटा।।
जाको रंग नील लहरत नित जस जमुना रस चटा।
रंग-रंग के पक्षी बोलें मोर शोर करि रटा।।
लता तरुन से लिपटी जहँ-तहँ विद्या निगमनि छटा।

वेदन ही में तत्व रहत जस लखि न परत अटपटा।।
लली लाल के नित विहार जहँ काहु सुकृत नहिं अटा।
तीनों पाप न जाय सकत तहँ मनहुँ उपासन हटा।।
घन रस बरषत पवन चलत जहँ सुख समाज तहँ ठटा।
कुंक 'देव' सो प्रेम नहीं तो धिग भगवा धिग जटा।।

पद-५९

भले दोउ लालै लाल लसैं।
मानहुँ दोउन के अंतर के प्रगट राग विकसैं।।
लाल बाग में लाल डोर से लाल हिंडोल कसैं।
लाल सखी कर फूल लिये हैं बहुत सुगन्ध बसैं।।
लाल वसन भूषण औ आसन लाल चँवर हुलसैं।
लाल लली तेहिं मध्य विराजत पान खाय विहसैं।।
लाल छत्रमंडल शिर सोहत दोउ काम सरसैं।
रंग लाल की या लाली लखि 'देवन' को मन फँसैं।।

पद-६०

रमन ऋतु आई आली।
चटकीली चूँदरी चारु प्रिय पहिरिये खुशहाली।
चहुँ दिशि दमक रही दामिनि दुति गरजन घनमाली।।
श्री अवधेश ललन झुलवाइये नव झूलन डाली।
'युगलअनन्यअली' बलि जाइये लखि छवि मतवाली।।

पद-६१

ललित लली लाल अलि झूलने झूलहीं।।

सरयू तर तीर मणि महल मोहन मदन,
मध्य परिकर निकर सुकर रुचि हूलहीं।।
युगल उत्साह चित चाह पंकज कली,
सुऋतु रवि निरखि हिय हरषि फवि फूलहीं।।
गान तर तान सुख खान दशदिशि श्रवन,
सुनि सु धुनि 'युग्म सखि' बिकी बिन मूलहीं।।

पद-६२

आज झुलाइहौं पिय तोको।

हिय अभिलाष लाख भाँतिन से है जीवन धन मोको।।
चंचलता चातुरी चलन चष चारु चरित अवलोको।
लैहों ललित लाह लोयन लखि चखि रत रस दुति दोको।।
हिलि मिलि हलन ललन लोयन वर सुनि सजिहौं सुख थोका।
'युगलअनन्यअली' निवछावर करि दैहों सब लोको।।

पद-६३

झूला झूलो रसिक रघुलाल सिया।।

सुखमा भरी सरी सरयू तट निरखत फूलत सखिन हिय।
उमगत उर उमगावत दोउ मिलि हँसत हँसावत प्राणप्रिया।
बोलहिं शकुन सोहावन भावन जनु रति पति बहु रूप किय।
'युगलअनन्य' ललित झूलन लखि निज जस रस गुन वारि दिया।

पद-६४

झूला झूलो हिंडोले आज रसि क रघुराज लला,
सरस समीर सुगन्ध बहत वर विहरत काम कल

सघन गगन घ
भाव भरी सह
'युगलअनन्य' ल

साजन झूलन
साजन हो झू
घन घुमड़ि च
साजन हो प्य
वारी जावों
साजन हो ग
उर उमगि-उम
साजन हो 'यु
माती विरह व

नव नागर ने
सावन सुमन सनेह
छावन सुछवि
रूप अनूप प्रभा
थोरी वयस वि
छाये व्योम सघ
अग-जग जी
'युगलअनन्यअल
निरखो नैनन

सघन गगन घन दाम दमक दुति दशदिशि हृदय दला।।
भाव भरी सहचरी चाह चित चमकति चन्द्रकला।
'युगलअनन्य' ललित झूलन लखि निज जस रस गुन वारि दिया।।

पद-६५

साजन झूलन की विमल बहार प्यार सज साजन।
साजन हो झूलिये झमक हिंडोले नवल रंग बोरे,
घन घुमड़ि चलति चहुँ ओरे, प्यार सज साजन।।
साजन हो प्यारी सुरंग अंग सारी छटा अनियारी,
वारी जावों हजारन वारी, प्यार सज साजन।।
साजन हो गावहिं गीत पुनीत रीति रस केली,
उर उमगि-उमगि अलबेली, प्यार सज साजन।।
साजन हो 'युगलअनन्य' अकेली अली तरसाती,
माती विरह व्यथा बहु भाँति, प्यार सज साजन।।

पद-६६

नव नागर नेह नहाये झूलत झूलना हो राज।
सावन सुमन सनेह सोहावन अँग-अँग मनमथ रति उपजावन।।
छावन सुछवि बहावन हरदम हूलना हो राज।।
रूप अनूप प्रभा चहुँ ओरी, दमकि रही दामिनि दुति गोरी।
थोरी वयस किशोरी कोउ तिय तूल ना हो राज।।
छाये व्योम सघन घन दरसे सुधा सार बूँदे बर बरसे।
अग-जग जीवन हरषे सरयू कूलना हो राज।।
'युगलअनन्यअली' कर जोरे छन-छन नाजुक नाह निहोरे।
निरखो नैनन कोरे न कबहूँ भूलना हो राज।।

पद-६७

झूलैं दोउ रसिया झूलन बाँकी।
पगे परस्पर प्रीति रीति रस बनी अनोखी झाँकी
उघरत मोद मनोरथ पल-पल रहत नहीं तिल ढाँकी।
गावहिं गीत सनेह सनी सखि युगल सुछवि छन छाँकी
'युगलअनन्यअली' झूलन लखि चपल चातुरी चाँकी।

पद-६८

झूलत प्यारी झुलावे प्यारो।
मधुर-मधुर करकंज मंजु गहि रेशम रज सुकुमारो।
नैनन निरखि नवेली विधु मुख मंद हँसनि नृपवारो
उरझि रहे अँग-अंग रंग रस सुरझनि अगम निहारो
'युगलअनन्यअली' दोउ नेहिन ऊपर सर्वस वारो

पद-६९

साजन सहित सिय झूलें झूमि झूलना।
उपमा के कारण तिलोक तिल तूलना।।
रही व्योम चपला चमकि घन थूलना।
सखिन समाज सोहें सजे साज फूलना।।
गावें गीत मधुर मलार अनुकूलना।
'युगलअनन्यअली' चाह चित फूलना।।

पद-७०

झूला झूलो विचारि के सुकुमारी न सिसके
हो सब विधि नागर आगर वर अडर होत केहि हिसके

सिरस सुमनहूँ से नाजुक तन रतन अनूपम खिसके।।
लीजे ललित लाह लोनी लखि रस-रस झोंकन मिसके।
'युगलअनन्यअली' झूलन बिन सब सुख मोदक विष के।।

पद-७१

मन मोरो मोह्यो जानकी जीवन को हिंडोर।
नाना रँग मणि मण्डित अजूब दुति डोर।।
पट प्रेम रस भीजे अंग-अंग चितचोर।
छवि उठत तरंग मानो सरयू हिलोर।।
उर उमगि-उमगि सखि गावैं चहुँ ओर।
पिक चातक विचित्र धुनि नाचि रहे मोर।।
झोंका झमक झमाक लली लालन सजोर।
मति मेरी बिकी कलित कटाक्षन की कोर।।
फूल्यो विपिन प्रमोद भौंर मत्त मची शोर।
जोहि 'युगलअनन्य' मोद मिट्यो मोर तोर।।

पद-७२

सावन के दिन में शौक से झूला झुलाइये।
कुल काज लाज साज सभी विधि भुलाइये।।
तजिके फिकर फरेब फरक सबसे होय के।।
उत्साह चाह चौन की खानें खुलाइये।।
सजिके सिंगार हार हजारों उमंग से।
सजनी सखी सहेली सलोनी बुलाइये।।
श्री जानकी जीवन की अदा ऐश को लखिके।
सब तौर 'लताहेम' छटा छवि छुलाइये।।

पद-७३

खुश लगता है सब तौर से झूलन का झलाना।
भूले न भुलाये मुझे अंगों का डुलाना।
मनमोहने सोहन लली लालन सनेह से।
भीने विहार प्यार निरखि होश भुलाना।
छन-छन में हाव भाव विलच्छन विकासिके।
देना अलीन मोद कलित गाय तर ताना।
अनुराग की नदियाँ बही हर तरफ रँगीली।
हिय 'हेमलता' फूलि के तन में न समाना।

पद-७४

पिया लखु हो सावन सु बहरिया।
धीर समीर नीर बरसत अति बसि गये सबुज शहरिया।
झूला झूलिये भूलिये मत पिय करिये नित कचहरिया
'कोविद' मोद विनोद महा रस जल थल बहत हहरिया।

पद-७५

लिये झूलैं छबीली सुघर धनियाँ।
मंद हँसनि मुखचन्द प्रकाशित दशरथसुत रघुपति रनियाँ।
घूँघट बीच अनोखी चितवनि सुभग उरोज कसे तनियाँ
'शीलमणि' नव रंग रंगीली जोरी सुभग सकल सुखदनियाँ।

पद-७६

प्यारी झूलन पधारो झुकि आये बदरा
साजि भूषण बसन अँखियन कजरा।

मान कीजिये काहे को सुख लीजिये अली।
तू तो परम सयानी मिथिलेश की लली।।
देखो अवध ललन पिया आगे हैं खड़े।
रस बरसैं 'सुधामुखी' जब पायन पड़े।।

पद-७७

धीरे-धीरे से झुलावो मेरी प्यारी ललना।
सिया अति सुकुमारी झोंका भारी भल ना।।
यह रूप की निकाई बिनु देखे कल ना।
सखी चाहती है नैना यह लागे पल ना।।
श्रम सीकर सुहाई बेसर मोती हलना।
कहैं 'सुधामुखी' गाय पिया मन छल ना।।

पद-७८

झमकि झूलत सिय रघुराई। विमल बरषा ऋतु बनि आई। कोटि रतिकाम से ललाम रसधाम राम, पिय घनश्याम सिय दामिनि तमक तामें, अति अभिराम गज मोतिन के दाम, सु बलाकनकी छवि छाई।। दादुर चक चकोर भूषण के शोर आली, मूरि-मूरि मोर सी नचति चितचोरि चोरि, तोरि-तोरि तान गाई। मेंहदी नखन वीर वधुन की भीर धुनि, मधुर मृदंग घन गरज अनंग जल, बरषि-बरषि हिय करषि-करषि 'सुधामुखी' सरि सरसाई।।

पद-७९

झूलन पर मान करी सिय प्यारी।।

करि मुख विमन झूलन से उतरी बैठी आइ द्रुम डारी
प्यारे उतरि मनावन लागे मानत नाहिं दुलारी।
पिय बोले सुन प्राण पियारी कौन सी चूक हमारी
हमरे तौ तुम प्राण जीवनधन तुम सम और न नारी।
तुव मुखचन्द्र सुधा के आशिक नैन चकोर हमारी
तुव मुखकमल भ्रमर मेरे मन होत कबहुँ नहिं न्यारी।
लै विजना पिय मुख पर ढौरे करत बयार सम्हारी
तब हँसि उठी 'सुधावदनी' सिय मिलि भरि भुज अँकवारी।

पद-८०

श्यामा श्याम की झुलनि मेरे मन अटकी।
लखि ललित लसनि सो सुरंग पट की।।
झोंका झमकि झुलावैं गावैं मुरि मटकी।
सुख सरस रसीली छवि चष अटकी।।
रस भीनी प्रीति युगलअली के घट की।
सोह सकल सु साज सरयू के तट की।।

पद-८१

सावन लागु सुहाई हो पियरवा।।
मनसिज घेरि घटा नभ छाये रस बरसत झरि लाई।
पिउ-पिउ कोकिल मोर पुकारत सुनि-सुनि जिय तरसाई।
कुसुमित विपिन प्रमोद लता तरु सननन चली पुरवाई।
झुलिहौं मैं आज 'रसिकमणि' तोहि सँग प्रीतम प्यारे रघुराई।

पद-८२

आरती करु सखि श्यामसुन्दर की।

मनमोहन प्रीतम सियवर की।।
मदन दम्भ के खम्भ गड़े हैं, कनक दण्ड मणि रतन जड़े हैं,
पटुली द्युति जगमगति अड़े हैं, तहँ बैठे दोउ सुखसागर की।।
दिनकर सम शिर क्रीट धरे हैं, चन्द्र ज्योति चन्द्रिका परे हैं,
तरिवन कुण्डल झलक परे हैं, नासामणि बुलाक छविधर की।
ताल पखावज बीन बजत हैं, चन्द्रकला सुभगाजू नचत हैं,
थेइ थेइ थेइ चहुँओर मचत हैं, रीझत नवल रसिक नागर की।
झूलत सिय 'रघुवर' सरसत हैं, झमकि झुलाय सखिन हरसत है,
कुसुमन ढरि सुरतिय बरषत हैं, जै-जै कहि दोउ सुखमाकर की।

पद-८३

नई-नई गोरिया करिवै सिंगार सब,
झूलन चली हैं नव सावन उमंग भरि।
लहँगा सु कटि देश किंकिणी अनूप वेश,
ओढ़नी कुसुम रंग मोतिन किनारी जरि।।
चोटियाँ गुही हैं भाँति रतन की लगी पाँति,
नैनो में काजर गले हीरन की पंच लरि।
बादर घुमड़ि आये बिजुरी चमकि छाये,
नान्हीं-नान्हीं बुंदिया झमक झमझम झरि।।
कोकिला कुहुक जागे मोरिला नचन लागे,
पपिहा बोलन लागे पिउ-पिउ करि-करि।
ओसरी-ओसरी झूलैं पिय प्यारी को झुलावैं,
गावैं राग सुहव मलार तान धरि-धरि।।
उड़त वसन खसि पड़त भूषण महि,

हँसि-हँसि 'रघुवर' देत हैं सुधारी करि।

पद-८४

क्या मजा सावन की सखि मौसम जो आई है।
दशरथ के बाँके छैल ने झूला लगाई है।।
जरकस को चीरा शीश पै कलँगी झुकाई है।
जुलमी जुलुफ जैसी मानो नागिनि जगाई है।।
केशर की चन्दन भाल में कुण्डल सोहाई है।
नैनों कटारी मारि कै घायल बनाई है।।
क्या छवि 'राघव' की बनी नैना लोभाई है।
दशरथ कुँवर के हाथ में तन-मन ठगाई है।।

पद-८५

सुन री सखी एक बात मैं तुमसे कहों प्यारी।
झूला लगी दिलदार की सावन हुई जारी।।
मोरों पुकारै बाग में कोयल कुहुक मारी।
पिउ-पिउ पपीहा बोल के मेरी जिगर फारी।
झूलौं सलोने साँवरे सिया संग सुकुमारी।
गावैं सखी सब रेखता रस की तरहदारी।
जबसे भवन मैंने सुनी झूलन बहरदारी
नहिं चैन पड़ती है मुझे छिन-छिन फिकरदारी।
करते न हैं हम पर सखी 'राघव' निगहदारी
कुछ हो गई हमसे सखी पिउ की कसुरदारी।

पद-८६

झूलत अवधेश लाल लीन्हें सँग सीय बाल,
बन प्रमोद सघन कुंज पुंज सखिन सोहैं।
कूजत कलकण्ठ मोर गुंजत भल भनकि भौंर,
बरषत घन गरजि थोर मरुत मनहिं मोहैं।
भूषण रव झमझमात सुरँग बसन गमगमात,
छमछमात छवि अनूप रति मनोज मोहैं।
बोलत मृदंग झाल निर्तत सखि देहिं ताल,
लूटहिं सुख नव रसाल 'रघुबर' मुख जोहैं।।

पद-८७

अवलोको सखी राज हिंडोरे।।

हेम जड़ित मणि खम्भ रचो रे, मोतिन गुहि सुठि रेशम डोरे।
पटुलि झलक जगमग चितचोरे, बैठे तापर युगल किशोरे।।
सावन सजि गरजत घनघोरे, कुहु-कुहु कुहकत कोकिल मोरे।
नान्हीं-नान्हीं बुन्दियन वरसत थोरे, पवनचलत पुरवाई झकोरे।।
बजत मृदंग सितार तँबूरे, तूम तननन सखि तानन तोरे।
निरतति चन्द्रकला रसबोरे, चहुँदिशि उचरत थेइ-थेइ-थेइ रे।।
झूलत सिय 'रघुवर' दोउ जोरे हलरत लट जुल्फन की मरोरे।
छवि छहरत फहरत पटछोरे, नेवछावरि रति मदन करोरे।।

पद-८८

कदमतर झूलत दशरथ लाल।।

लाल घटा झुकि गरजत वरषत दामिनि दमकत लाल।
लाल बाग कुसुमित तरु शोभित बोलत कोकिल लाल।
लाल सखी झुकि झमकि झुलावहिं फहरैं वसन सुठि लाल।
लाल-लाल सब साज बाज लिये झूलत सिय रघुलाल,।

पद-८९

मेरी प्यारी सियाजू हिंडोले झूलैं लाल री।
लाल महल में लाल हिंडोला लाल-लाल सब बाल री।
लाल-लाल सब सौंज लिये कोइ छरी फूल लिये लाल री।।
लाल चन्द्रिका शीश विराजै करनफूल युग लाल री।
लाल नासिका बेसरि शोभै छवि बुलाक अति लाल री।।
लाल कंचुकी सारी कुसुम रँग लाल गले मणि लाल री।
कंकण किंकिणि लाल विराजै भाल बिन्दु इक लाल री।
झूलहिं 'रघुवर' प्यारी सियजू देखि रती उर साल री।।

पद-९०

मेरा बाँका सँवलिया हरे रंग झूलत आज रे।।
हरित महल में हरित मणिन में हरित हिंडोला भ्राज रे।
हरे-हरे भूषण सब साजे झूलत श्री रघुराज रे।।
हरित सितार सारंगी वीणा हरित ताल छवि छाज रे।
हरित सखी सब नत्य करत हैं हरित पखावज बाज रे।।
हरित भूमि सब तरुवर हरि-हरि हरित कीर खग बाज रे।
हरित मोर भवनन पर नाचत हरित गगन घन गाज रे।।
हरित सीय 'रघुवर' छवि लखि करि काम कोटि शत लाज रे।

हरित छटा
तनि
घनन-घनन
चन्द्रबदनि
बड़े-बड़े
अरजी न म
सुनिये सज
झमकि-झ
लह-लह-
टुटिगो हार
अतिशय
रसिक शिरो
दै गलबाँह
कैसे
गरजि-गरजि
झुकि झोंक
कदम डार
यह विनती

हरित छटा अवलोकि गगन ते कुसुम वरष सुरराज रे।।

पद-९१

तनिक धीरे झूलो जी राजकिशोर।।

घनन-घनन घूमि बादर घहरत बिजुरी चमके चहुँओर।
चन्द्रबदनि सिय थर-थर काँपति डरपि गहति पट छोर।
बड़े-बड़े बूँदन बरसत सरसत सुरँग वसन भीजे मोर।
अरजी न मानहु 'रघुवर' प्रीतम कस कठोर चित तोर।

पद-९२

सुनिये सजन रगरी रे। तोरे संग ना झुलिहौं कजरी रे।
झमकि-झमकि झर सावन बरसै भीजि गई चुंदरी रे।
लह-लह-लह-लह चलु पुरवैया काँपत तन सगरी रे।
टुटिगो हार फुलन के गजरा मोतियन की तिलरी रे।
अतिशय झोंक झुलावहु रसिया गिरि गई नथ दुलरी रे।
रसिक शिरोमणि 'रघुवर' तुम से लगी है प्रेम फँसरी रे।
दै गलबाँह मिलहु अब बालम इतनी अरज हमरी रे।

पद-९३

कैसे झुलिहौ बलमुआँ सावन रगरी।।

गरजि-गरजि घन जिय तरसावत निकसि चलत भीजि गई सगरी।
झुकि झोंकहु पिय बात न मानहु मुरुकि गई नाजुक अँगुरी।।
कदम डार मोरि चुँदरी उरझि रही सुरझन दे पिय गैहौं कजरी।
यह विनती मानिय पिय 'राघव' नित-नित झुलिहौं मैं तोरे संगरी।

पद-९४

कदम डार मोरी सारी लटक रही कैसे के झुलिहौं सवनवाँ।
एक बैरी मोरी कदम डार भई दूजे पुरवाई पवनवाँ।
चलत झकोर अलक मोरी छूटि गई आई हौं नई गवनवाँ।।
झुकि झोंकहु पिय बात न मानहु गिरि गयो कर के कँगनवाँ।
हौं सुकुमारी कमर लचि जैहें फिरि कैसे जैहौं भवनवाँ।।
टुटि गयो हार गले मोतियन की तिलरी में लगी फुदनवाँ।
निपट निठुर प्रीतम 'रघुवर' तुम लखहु न मेरी बदनवाँ।।

पद-९५

मैं जानी सजनी सावन अब जैहें।
झूलि लेहु प्रीतम नागर सँग न तो कर मीजि पछितैहैं।।
यह सुख साज समाज सोहागिनि फिर न अनत कहुँ पैहैं।
सुमिरि-सुमिरि यह छवि 'रघुवर' की छिन-छिन विरह सतैहैं।

पद-९६

लाल मोरी अँखियाँ नींद झुकि आई।
अब जनि झूलो रसिक शिरोमणि नींद सो नैन पिराई।।
झोंका दे न सकति सखियाँ सब झुकि-झुकि खसति घुमाई।
चन्द मन्द दुरि हेरत हिरणी मोतियन माल सिराई।।
करत शोर चहुँओर मोर पिक रजनी के अन्त जनाई।
कहति जनकजा सुनो पिया 'रघुवर' झूलन देहु थमाई।।

पद-९७

चकई न बोले श्याम बैठ क्या बोल बोले,
कोकिल अकुलानी कहीं कोकिला विछानी है।
दीपक की मन्द ज्योति तेलहूँ ते पूर नाहिं,
जागत पुरी के लोग तस्कर निगरानी हैं।।
घंट घहरानी कहीं अवध घर पूत भयो,
चिरैया चहचहानी कहीं अहिते डेरानी हैं।
जान दो तो जान दो न जान दो तो साँची कहों,
सूरज की किरण श्याम देखो दरसानी हैं।।

पद-९८

रसिया न मानै सजनी झूलत मन न अघाय।
सोवति सजनी अपने भवनमाँ औचक मोहि जगाय।।
बन प्रमोद कुञ्जन-कुञ्जन में नित उठि झूलत आय।
'ज्ञानाअलि' सिय पिय सँग झूलिहौं अभय निशान बजाय।।

पद-९९

झूलत रसिक श्यामा श्याम।

श्री जनक नृप नन्दिनी रघुनन्द आनन्द-धाम।
नवल घन तन श्यामसुन्दर तड़ित द्युति सिय वाम।।
युगल छवि अवलोकि झुकि-झुकि काम करत प्रणाम।
चहूँ दिशि घन घेरि आये चपला दमकत दाम।।
मधुर मृदु रव कोकिला धुनि सुनत मन विश्राम।
अति अनूप हिंडोलना छवि सखिन को अभिराम।।

'ज्ञानाअली' सिय लालमुख छवि निरखि पूरण काम।

पद-१००

नवल दोउ झूलत हरे-हरे, छवि सिंगार भरे।
सरयूतीर हरित कुञ्जन बिच तरु तमाल के तरे।।
हरित वितान तन्यो ता ऊपर हरितहिं फरस परे।
तापर हरित्त हिंडोर मनोहर देखत मनहिं हरे।
हरित पाग बागो सो हरित है भूषण मणिन हरे।।
वसन विभूषण हरित रंग क्या सिय अंग भूषित करे।
हरित पोशाक सखिन अँग साजे मेघ मलार उचरे।।
त्रिविध समीर बहत सुखदायक रंग फुहार झरे।
हरित छत्र शोभित सुषमानिधि हरित सो चँवर ढरे।
'मधुरअली' लखि हरित छटा सब निज हिय माहिं धरे।

पद-१०१

दै गलबाही झूलैं दोउ आज।
सरयू तीर तमाल कुंज में जनकलली रघुराज।
काह कहूँ सखि कहत बनै ना कोटिन सुख के साज
'मधुरअली' सब तजि सँग झुलिहौं छाँड़ि लोक कुल लाज।

पद-१०२

झूलत लाड़िली रघुवीर।
रतन जड़ित हिंडोलना सुचि सुभग सरयू तीर।
करहिं गान मलार अलिगन स्वर सुखद गम्भीर
नचत थेइ-थेइ मोर गति लै मोद उमग शरीर।
समय लखि सुर सुमन बरषत जलद बरसत नीर

'मधुरअली' समीप पंखा लिये करत समीर।।

पद-१०३

सिय पिय दोनों झमकि झुकि झूलैं।
झोंका देत परसपर हँसि-हँसि फहरत अरुण दुकूलैं।।
तिरछी तकनि साँग सी हूलैं होत अलिन उर शूलैं।
'मधुरअली' आनन्द के मारे प्रेम विवश सुधि भूलै।।

पद-१०४

तनिक महरानी चलू यहि ओर।
इत उनयी पुनीत सरयू तट श्याम घटा घनघोर।।
महाराज ठाढ़े मग जोहत साजे नवल हिंडोर।
दामिनि दमकि रमकि छबि छहरत बोलत दादुर मोर।।
यों सुनि स्वामिनि बेगि सिधारी सजि तन सुरँग पटोर।
'शिवदयाल' दम्पत्ति मिलि हरषैं बिहँसि चितै दृग-कोर।।

पद-१०५

आये हो, सिय रघुनन्दन लै सखि वृन्दन झूलन चाये।
शिर पुहुप मुकुट सुमाल पुहुप सुपुहुप कुण्डल कान है।
कटि भुज चरण सब पुहुप भूषण कछु न जग उपमान है।।
सब अलिन अंगन पुहुप अभरन बसन वेष विराजहीं।
सिय सजी पुहुप सिंगार राजति रुचिर सखिन समाजहीं।।
आनन्द छाये।।
पन्ना पदिक पटुली जटित गजमणि मही मण्डित करे।
नीलम सुखंभ दराज बेलन पहुपराज छटा छरें।।

भँवरी विभाजित जड़ित माणिक इंद्रमणि कलसावली
जरकस वितान निशान झालरि मुकुत की झलकावली।
सरयू तट भाये।।२।

चहुँ ओर घहरत घोर घन बरसत सु हरषावन हियो
सब ठौर मोर मचाइ शोर शिखीन सुख पूरन कियो।
नव विटप वल्ली हरित वरन विशाल तालन तै लगी
नव दूब इन्द्रवधू विराजहिं मनहुँ विधि चूनरि रँगी।
सर भरि आये।।३।

सखि गहे वीण मृदंग मुरज उपंग मंजु बजावहीं
पूरिया गोंडहुँ सूर मेघ मलार रागिनि गावहीं।
सुखकन्द झूलत मन्द-मन्द सुचन्द वदन सोहावहीं
कोउ विजन वीजहिं बाल कोउ 'रघुराज' चँवर चलावहीं
जनम फल पावें।।४

पद-१०६

सरयू के तीर गड़ो हिंडोलना झूलत सीताराम आली
मन्द-मन्द बरषत घन बुन्दन, झरत मनहुँ कलिका नवकुन्द
हरित वरन आराम आली।। छिन-छिन दिशनि दिपति दामिनिय
झमकि झुलाय रहीं कामिनियाँ, पिय छवि दृग आराम आल
'श्रीरघुराज' शोक सब बिसरो, पूरण भयो मनोरथ सिगर
आनन्द आठों याम आली

पद-१०७

दोऊ झूलत हिंडोरे रामसिया, सजनी उर बोवत प्रेम बिय

उमड़ि-घुमड़ि आये
शोक नसावन सुख
'श्रीरघुराज' झमक

सिय

झूलि रहे सरयू
उड़ैं अलकैं लहि
मनो शशि पै च
कोमल बूँद झरैं घ
परस्पर वारत सि
आवत जात हिंडो
सु सावन गाय ल

सरयू के तीरवा
बरसत बदरवा ह
सखि दिपत आन
पल्लवित कानन
प्रीतम झुलावैं
दृग छवि छकावैं
पट अरुण सोहत
अवधेश राजकु
जग काज तजि छ

उमड़ि-घुमड़ि आये बादरवा, मोरवा मंजुल शोर किया।।
शोक नसावन सुख सरसावन सावन गावन लागीं तिया।
'श्रीरघुराज' झमक झूलन में बीन बजावत सीय पिया।।

पद-१०८

सिय के पिय की छबि देखैं।

झूलि रहे सरयू सरि तीर मचाय आनन्द अलेखैं।।
उड़ैं अलकैं लहि पवन प्रसंग मुखें छहरैं पट पीतहिं संग।
मनो शशि पै चलि जात भुजंग निवारत दामिन पेखैं।
कोमल बूँद झरैं घनवृन्द, पीताम्बर अंचल कर अरविन्द।
परस्पर वारत सिय रघुनन्द हँसै दोउ आनन्द देखैं।।
आवत जात हिंडोल सुहात प्रभा सित श्याम छटा छहरात।
सु सावन गाय लखैं सखिव्रात तजैं 'रघुराज' निमेखैं।।

पद-१०९

सरयू के तीरवा गड़ो हिंडोरवा झूलत रघुवर जानकी।
बरसत बदरवा हरि हियरवा मनहुँ लर मुकुतान की।।
सखि दिपत आनन भरि दिशानन लेहिं तानन धूरिया।
पल्लवित कानन निरखि भानन सुख बितानन पूरिया।।
प्रीतम झुलावैं सुरँग छावैं बहु बजावैं बाजने।
दृग छवि छकावैं पिय हँसावैं हुलसि कहि-कहि साजने।।
पट अरुण सोहत मनहिं सोहत देव जोहत जकि रहैं।
अवधेश राजकुमार राजत सहित सखिन समाज हैं।
जग काज तजि छविलाज लखि बलि जात नत 'रघुराज' हा।।

पद-११०

झूलत कुञ्जन भीजि रहे दोउ।

पिय मृद बैननि मोहि गई सिय, सिय मृदु बैननि मोहि रहे सोउ।।

सिय झिझकति हरि करनि सँवारति सियकर पकरत विहँसत ओउ।

'श्रीरघुराज' छकी सब सखियाँ अँखियाँ में नहिं पलक करैं कोउ।।

पद-१११

झूलैं नवल रसिक रंग भीने दोऊ आज।

फूली कमल कली से मृगनयनी की समाज।।

घिरी सघन घटा सी छवि रघुकुल राज।

संग सोहैं सिय प्यारी लखि दामिनी हूँ लाज।।

बन्यो विपिन प्रमोद सब सुषमा को साज।

'सिय रसिक अली' के हिये यहि छवि छाज।।

पद-११२

सिय सजि सावन तीज सजन सँग झूलैं हो।

सजि सुरंग पोशाक सखी सम तूलैं हो।।

गावहिं राग मलार श्रवण सुख मूलै हो।

कानन कल कमनीय काम लखि भूलै हो।।

किसलय कोमल धुन अशोक बन फूलैं हो।

बिकसे कमल कल नीर सरयू के कूलैं हो।।

'अलिसियररसिक' झुलाये सोऊ दिन दूलैं हो।

अब

पवन चलत पुरवा

बजत मृदंग गर

मानो धुनि नू

नटत मयूर थिरि

फर रर रर, राग मला

विपिन प्रमोद

ललित तरु शोभि

सुख सरसत बाद

दशरथ राजदु

सरयू किनारे

ताहि तर झूलैं

एक ओर जनक

एक ओर राघो

प्यारी की लट

अचल रहैं 'सखे

मैं तोरे संग ना झ

अतिशय झोंक झ

अँचरा फरकि-फर

पद-११३

अब घन घमण्ड नभ छाये।
पवन चलत पुरवाई सननन चमचम चपला चमकाये।।
बजत मृदंग गरज जलधर की, झिल्ली झनकारैं
मानो धुनि नूपुर की, मेढक ताल बजाये।।
नटत मयूर थिरकि थर रर रर, तासु शिखंड फरकि
फर रर रर, राग मलार उचार चातकन, कोकिल कल स्वर गाये।।
विपिन प्रमोद मदन मन लोभित कुसुमित लता
ललित तरु शोभित, उर उमंग दम्पति दिल करषत,
सुख सरसत बादर झुकि बरसत, पावस रहस रचाये।।

पद-११४

दशरथ राजदुलारे सिया सँग झूलैं हो।।
सरयू किनारे सुहाई कदम जुरि छहियाँ हो।
ताहि तर झूलैं हिंडोरा दिये गलबहियाँ हो।।
एक ओर जनक किशोरी सखिन सँग सोहैं हो।
एक ओर राघो विहारी लली मुख जोहैं हो।।
प्यारी की लट पिया जुलुफन झूलत अरुझैं हो।
अचल रहैं 'सखे श्याम' कबहुँ नहिं सरुझैं हो।।

पद-११५

मैं तोरे संग ना झूलौं बालम जियरा गइल घबराय।
अतिशय झोंक झुलावत रसिया बेसर गइल हेराय।।
अँचरा फरकि-फरकि महि लोटत गूँथे लट छिटकाय।

'श्यामसखे' मोरी अँगिया भीजि गई बेनियाँ दीजै डोलाय।।

पद-११६

झमकि झुलोंगी सैंया तोरे सँग ऋतु सावन की बहार।।
सरयू किनारे नई-नई गछिया रे जहँ रचे मदन बजार।
रमकि बहत पुरवइया रे बुन्दन परत फुहार।।
धरि-धरि तोरे गलबहियाँ रे गाऊँगी राग मलार।
'श्यामसखे' कदम जुरि छहियाँ रे नित नई करिहों बहार।।

पद-११७

पिय लागो सावन मास-आस यह मेरी।
चलि झूलैं विमल हिंडोर गले भुज गेरी।।
भये हरित वरन-वर भूमि सोहावन लागै।
फूलैं फलैं विपिन प्रमोद मोदमय बागै।।
गुंजत मधुकर करि शोर मोर मन रागै।
भल समय सुखद अवलोकि निठुरपन त्यागै।।
शुक चातक कोयल हंस कोकिला टेरी।
सुनि प्राण प्रिया वर वैन नैन लखि प्यारी।
गहि अंक रंक ज्यौं सुधन मोद लहि भारी।
चलो मेरी जीवन जानि सकल सुखकारी।
श्री चन्द्रकलादिक सखी सुसाज सम्हारी।।
आयो सरयू वर तीर घटा घन घेरी।।
विद्रुम नगमणिरचि हेम अनूपम झूला।।
तेहि बैठे सिय महबूब खूब अनूकूला।

सखि झुकि-झुकि झमकि झुलाय पाय प्रिय दूला।।
नभ विबुध वधू बहु हरषि वरसि रहीं फूला।
सुखकन्द मंद मुसुकाय सिया तन हेरी।।
पट पीत नील फहराय लपटि अरुझानी।
दोउ नील पोत मिलि हरित रंग प्रगटानी।।
सुरझावत सिय-पिय विहँसि नहीं सुरझानी।
सखि गावैं हरे-हरे गीत हेरि सुखमानी।
प्रीतम तमाल तरु 'प्रीतिलता' लपटेरी।।

पद-११८

झलित झलमालित झुकि झूमि दोउ राजहीं। नीरजा तीर श्री जनकजा संग मिलि धीर रघुवीर हिंडोल सुख साजहीं।। बजत वर बाजने छाजने मेघ धुन शोर घनघोर पिक मोर मन गाजहीं। अरुण वर वसन खुश रंग रंगी लसे 'जानकीवर' सहित छैल छवि छाजहीं।।

पद-११९

परसपर झूलन छवि हेरैं, सुहँसि हँसि दोउ भुज गर गेरैं। बन चैन ऐन सम अनत लखै न कहुँ आनन्द के दैन दोउ लैन मन मैन हर, चातकी चकोरी मोरी गोरी चहुँओरी शोरी, सिय-सिय-पिय टेरैं।। श्याम गौर गात नील पीत पट फहरात छवि छहरात बात बहत त्रिविध शुभ, परसि-परसि रस सरसि बरसि मानों, घन दामिनि घेरैं।। अवध सरयू तीर हीर मणि छिति मिति मिलित परेश पर परम प्रकाश नित, निगम अगम गुरु करुणा सुगम 'प्रीतिलता' सिय-पिय मेरैं।

पद-१२०

चलो री-२ मोरी संग की सहेली सिय पिय झूलत झुलन
निरखति विपुल व्योम सुरवामा हरषित बरषि फुलन
सिय मुख शशि पिय नैन चकोरी यह छवि नाहीं भुलन
श्री चन्द्रकलादि अली अलबेली दुहुँ दिशि हूलत हुलन
गान तान सखि प्राण सजीवन हिये की हरत शुलनवाँ
सिय-सिय पिय हँसि दिये गलबहियाँ पटतर कहुँ न तुलन
'प्रीतिलता' दोऊ जीवनधन सब सुख के हैं मुलनवाँ।।

पद-१२१

हेरो-हेरो सिया छवि आज पिया सँग झूलि र
निरखि-निरखि सुखकन्द चन्द्रमुख हर
सरस सुख पाय, अपनपौ भूलि रहीं
प्रीतमहूँ अवलोकि प्रिया छवि नि
मति गति सरसाय, महा मुद मूलि रहीं
श्री चन्द्रकला श्री चारुशिलादिक दुहुँदिश शो
बढ़ाय, झमकि झोंका झूलि रही
नव नागरि सिय पिय नव नागर दृगन रही छ
छवि छाय, 'सुप्रीतिलता' फूलि रही

पद-१२२

झूलैं रमकि झमकि प्रमुदित तन-मन।।
सिया सोम बट छाहीं पिया दिये गलबाहीं,

शोभा बरनि न जाहीं कहाँ दामिनी सुघन।।
साजे साजन सुरंग अंग-अंगन उमंग,
मृदु सरयू तरंग भली उठै छन-छन।।
नभ विबुध बधूटी कुसुमाञ्जलि छूटी,
सब दृग फल लूटी जुटी लखैं एक तन।।
सखी झमकि झुलावैं पिया प्यारी मुसुकावैं,
बलि-बलि बिकि वारैं सब लाल रतन।।

पद-१२३

पिया धीरे से झुलावो सुकुमारी प्यारी हैं।।
नव सप्त साज साजे, लखि रति मति लाजे,
अंग-अंग छवि भ्राजे, सु डरत भारी है।।
बहैं त्रिविध बयारी, नभ घटा घनकारी,
बार बरस फुहारी, फहरत सारी है।।
सिया स्वामिनी जू मोरी, प्यारे देखो गहि डोरी,
सखी कहत निहोरी, निठुराई धारी है।।
सुनि जानकीसुवर पिया, पायन सु परि,
'प्रीतिलता' फूलि करि, तन-मन वारी है।।

पद-१२४

झूला झूलो सही मेरे प्राण प्यार से झोंको ना।
जब पिय झोंका देत झमकि के डरति सिया सुकुमारी, लाल तुम रोको ना।। जस महराज कुमार कुँवर तुम अधिक लली सुकुमारी, लाल झकझोरो ना। 'प्रीतिलता' अलि रसिक

शिरोमणि बसिया सरयू कूल, लाल मुख मोरो ना।।

पद-१२५

झूलैं दोउ साजन साज हिंडोर।

रंग रहस अनुराग रसीले हँसत हँसावत प्रिय मुख मोर।।

झोंका देत लली लालन जब प्रीतम रस बस करत निहोर।

'प्रीतिलता' अनुराग राग सुनि झुलत झुलावत ह्वै गयो भोर।।

पद-१२६

सुप्यारे जू झूलन की रितु आई झमकि झुकि झूलो झूलना।

सुप्यारे जू कुसुमित विपिन प्रमोद चलो श्री सरयू कूलना।।

सुप्यारे जू सब गावें मंगल गीत सखी सब करति कलोलना।

सुप्यारे जू 'वेंकट' हिय परम हुलास निठुर बातें जनि बोलना।।

पद-१२७

कदमतर झूलत अवध बिहारी।

सुन्दर बन प्रमोद सरयू तट अजब छटा छविधारी।।

संग सखिन के रमकि बढ़ावत मारत नयन कटारी।

'वेंकट' किमि कहि सकत युगलछवि कोटि मदन रतिवारी।।

पद-१२८

चलो देखन जाऊँ री झूलत झुलना।।

श्री सरयू तट कुञ्ज मनोहर कुसुम जहाँ बहुविधि फुलना।।

रघुनन्दन श्री जनकनन्दिनी लखि छवि रति मनसिज भुलना।।

श्याम गौर वर वरण सरस अति घन दामिनि उपमा तुलना।।

नख शिख भूषण वसन सोहावन अंग-अंग ललित सुघर खुलना।

'नवलप्रिया' छवि देखि मगन भई लाज कानि गति सुधि कुल ना।

पद-१२९

देखो-देखो री झूलत मिथिलेश दुलरी।
सँग बहिनि अमित सहचरी सगरी।।
नव वयसि नवल अँग रँग चूँदरी।
दृग अंजन तिलक हल नथ बेसरी।।
झोंका अरस परस देति माति अगरी।
शुभ तड़ित चमक बरसत बदरी।।
लखि मोही रमा शारद गौरी रति री।
लखि 'नवलप्रिया' के बड़ भाग फल री।।

पद-१३०

अहो लाल धीरे झूलो लाड़िली डरै छे।
लाड़िली डरै छे अंग उघरै छे मोती लड़ लुढ़कि परै छे।।
अति सुकुमारि भार यौवन के मृगनयनी चमकि परै छे।
'जनरघुनन्द' सियापिय छवि पे पलक सों पवन करै छे।।

पद-१३१

इतनी अरज मोरी मानो तनिक धीरे, झूलो हो मोरे प्राण।
झोंकत हो रोकत नहिं प्रीतम, तकि तिरछी मुसुकान सान हिय हूलो।
अरज करत नित बरजो न मानत, 'राममीत' चित आनो बान यह भूलो।।

पद-१३२

उमड़ि घुमड़ि आई बादर कारी।
दशरथलालन जनकललीजू बैठे सखिन सँग महल अटारी।।

कुसुमी वसन युगल तन राजत जगमगात भूषन उजियारी।
अलकैं बिथुरि रहीं मुख ऊपर मुकुटचन्द्रिका लटक सँवारी।
चन्द्रावती मृदंग टकोरति चंद्रा तानपूरा करतारी।
चन्द्रकलाजू बीन बजावति गावत उमँग भरे पिय प्यारी।
अधिक प्रवाह बढ्यो सरयू को भरे प्रमोद विलोकत वारी।
'युगलप्रिया' रसिकन के संपति अगम निरखि रतिपति बलिहारी।

पद-१३३

उमड़ि घुमड़ि घन बरसत बारी।
श्रीमिथिलेशनंदिनी प्रीतम भीजत वन प्रमोद द्रुम डारी।
पीत वसन नीलांबर दोऊ ओढ़ि खड़े भये युगलबिहारी।
मानहुँ घन दामिनि के भीतर चन्द्र चन्द्रिका सोभित न्यारी।
कुंज-कुंज सुध पाय अलीगन भींजत आई निरखि बिहारी।
चंद्रकलाजू छत्र ओट किये महल पधार सुधारि सँभारी।
भींजे वसन उतारि मोद भरे नवल वसन श्रृंगार सँवारी।
युगलप्रिया निवछावरि तनमन समै भोगधरि आरति बारी।

पद-१३४

हिय कसकत झूलन झोंक सही नहिं जाती।
पिय सिसकति सिय सुकुमारि दरद नहिं आती।।
लखि लली अली सब भली खड़ी पछताती।
कोउ कहत चली मुख मोरि-मोरि मुसुकाती।।
कह्यो राजकुमार न सुनो यार यहि भाँती।
तन कोमल कमल की कली कठोर की छाती।।

जिय डरपि लपटि पट पकड़ि गये लपटाती।
तन कम्पति कहति न कोई इन्हैं समुझाती।।
तनि धीरे झूलो बेपीर कमर लचि जाती।
ऐसो 'राममीत' निरमोहि न मोहिं सुहाती।।

पद-१३५

पिय लखो हो सरयू की बहरिया।
धार भरित अति प्यार हरित तट लेती ललित लहरिया।।
सावन घन गरजत बरसत सुख सरसत अवध शहरिया।
झूलहु चलि 'रसरंगमणी' अब तजि रघुवीर गहरिया।।

पद-१३६

सरयू के कूल विरचित झूला, झूलत सिया रघुराज आली।।
रिमझिम-रिमझिम बरषत बदरा, भीजत सिय सारी पिय चदरा,
जल कन मुखन विराज आली।। लै कर पट रघुवर पटरानी,
विहँसि परस्पर पोंछत पानी, लखि सब सुखी समाज आली।।
गावैं सखी सुहावन सावन सुनि 'रसरंगमणी' मनभावन,
अति आनंदित आज आली।।

पद-१३७

सखि सुकृत सरयू कूल सिय रघुवरहिं झमकि झुलावहीं।
सजि हेम हीर हिंडोर युगल किशोर केलि खुलावहीं।।
कोउ गाय तान तरंग तरल उमंग रंग रचावहीं।
कोउ नचहिं सब अँग लचहिं साज सजाय मोद मचावहीं।।

कोउ बाम बिहँसि ललाम लली सो लाल नाम लेवावहीं।
सिय लजहिं बैन न कहहिं पिय तन नयन सैन बतावहीं।।
अलि लहहिं अति आनन्द सिय रघुनन्द छवि मन भावहीं।
चिरजीव 'मणिरसरंग' जोरी रंगनाथ मनावहीं।।

पद-१३८

धीरे-धीरे हो झुलावो मेरे बाँके बलमाँ।
झोंका झोंको जनि जोर छैला छाके छल माँ।।
अस कहि सिय डरीं लपटानी गलमाँ।
मानो मिली सुर सरित जमुन जल माँ।।
लागीं गावन सुहावन सुकण्ठ कल माँ।
करें पौन पिय प्यारी पगे नैन पल माँ।।
बसें ऐसे सीताराम जाके हिय थल माँ।
धन सोइ 'रसरंगमणि' भूमि तल माँ।।

पद-१३९

ये हो मोरे प्राण धीरे झूलो झूला।
प्रीतम मम जिय डरत झरत बहु बेंदी के गूँथे फूला।।
फिर परिहौ पायन मन भावन रोपिहौं जबहिं मान को मूला।
मणिरसरंग' कहैं सिय पिय सो रमकहु राजकुँवर अनुकूला।।

पद-१४०

अपने मैं गुरु को झुलैहों नव नेह हिंडोर।
चिहौं विमल वर भूषण विमलवर भूषण, पूषण छवि जोर।
ुचि खम्भ अदंभ के प्यारे, अदंभ के प्यारे चितरंभ के चोर।

अवध-अवधि निर
मरुवा अमन मन
पटरी प्रतीति सुप्री
हिय गगन श्याम
प्रेमा परा अलि अ
'श्रीयुगलबिहारिणी

आज श्री स
देखि दासों क
रस रसिक श्री
देत भक्ति सु
नेह-नेह सु ब
पद परसते छ
सम दमादि व
गंभीर धीर सु
बोलनि हँसनि चि
चित बसत 'युग

झुलन
ललित अलाप
नाना भाँति नि
'रामवल्लभाशर